



फरवरी के मुख्य कृषि कार्य

राजीव कुमार सिंह*, कपिला शेखावत*, प्रवीण कुमार उपाध्याय*, एस.एस. राठौर* और संदीप कुमार सिंह**

❄️ फरवरी माह बसंत पंचमी का त्यौहार लेकर आता है। चारों तरफ पीले-पीले फूल खिले होते हैं तथा मौसम में धीरे-धीरे ठंड कम होने लगती है। त्वरित गति से बढ़ती जनसंख्या, अनियोजित शहरीकरण व औद्योगिकीकरण और भूमि, जल तथा वायु आदि प्राकृतिक संसाधनों का अनियन्त्रित दोहन, जलवायु में अस्वाभाविक बदलाव जैसी गम्भीर समस्याओं से घिरे देश के कृषि क्षेत्र को नये आयाम देने की आवश्यकता है। किसानों को ऐसी तकनीकियों तथा फसल पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता है, जिनसे प्रयोगशालाओं में तैयार की गयी तकनीकियां किसानों के खेतों से होते हुये बाजार में कड़ी टक्कर दें। पर्यावरण संतुलन भी बना रहे और कृषि पर निर्भरता कम करके कृषि आधारित व्यवसायों व उद्योगों को बढ़ावा मिले। इससे ग्रामीण अंचल न केवल आत्मनिर्भर बनेगा, बल्कि अर्थव्यवस्था से मजबूत होकर स्वावलम्बी व खुशहाल भी बनेगा। 🌱

किसान समृद्धि हेतु नयी तकनीकों, जलवायु संबंधित जानकारी व मौसम के पूर्वानुमान का उपयोग, उन्नत प्रजातियों के गुणवत्ता वाले बीज, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, फसलों में समेकित रोग व कीट प्रबंधन, फसल विशेष संबंधित नवीनतम सस्य क्रियाओं द्वारा फसल उत्पादन, विभिन्न सब्जी, फल और बागवानी एवं पुष्प व संगंधीय फसलों की देखभाल, बेमौसम सब्जी उत्पादन, उन्नत मशीनीकरण, बाजारोन्मुखी खाद्य उत्पादों

*सस्य विज्ञान संधाग, भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली-110012;
**वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, सांडस कला, पोस्ट-महलगुलारा, जिला बुरहानपुर (मध्य प्रदेश)

की जानकारी आदि की उपलब्धता बहुत ही आवश्यक हैं। अपने उत्पादों की अवश्यभावी आमदनी हेतु कटाई उपरान्त तकनीकियां एवं फल व सब्जी प्रसंस्करण विधियां अपनाने की भी किसानों को नितांत आवश्यकता है। इस माह में किए जाने वाले प्रमुख कृषि कार्यों पर जानकारी नीचे दी गयी है।

गेहूं और जौ

- फसल को गिरने से बचाने के लिए बाली निकलने के बाद सिंचाई वायु की गति के अनुसार करें। समय पर बोई गई गेहूं की फसल में फूल आने लगते हैं, इस दौरान फसल को सिंचाई की बहुत जरूरत होती है। गेहूं में समय से बुआई के हिसाब से तीसरी सिंचाई गांठ बनने (बुआई के

60-65 दिनों बाद) की अवस्था तथा चौथी सिंचाई फूल आने से पूर्व (बुआई के 80-85 दिनों बाद) एवं पांचवीं सिंचाई दूधिया (बुआई के 110-115 दिनों बाद) अवस्था में करें। पछेती या देर से बोयी गयी गेहूं की फसल में कम अंतराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसलिए फसल में अभी क्रांतिक अवस्थाओं जैसे-शीर्ष जड़ें निकलना, कल्ले निकलने समय, बाली आते समय, दानों की दूधिया अवस्था एवं दाना पकते समय सिंचाई करनी चाहिए।

- मैंगनीज की कमी के लक्षण गेहूं की ऊपरी पत्तियों पर पीली धारियों के रूप में नसों के बीच में प्रकट होते हैं,

जबकि नसें स्वयं हरी रहती हैं। कुछ पौधों में नसों के बीच भूरे रंग के धब्बे बनते हैं, जो आगे चलकर बड़े धब्बों का रूप ले लेते हैं। इसकी कमी के लक्षण सर्वप्रथम नई पत्तियों में दिखाई देते हैं। ऐसी मृदा, जिसमें मैंगनीज की उपलब्धता 1 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मृदा या इससे कम होती है, अधिकांशतः में उगने वाली फसलों में मैंगनीज के उर्वरकों के प्रयोग से गेहूँ की उत्पादन में वृद्धि दर्ज की गयी है। मैंगनीज की कमी वाले पौधे के ऊतकों में मैंगनीज की सान्द्रता प्रायः 25 मि.ग्रा./कि.ग्रा. ऊतक से कम होती है। फसलों में मैंगनीज की कमी के लक्षण दिखाई देते ही तुरन्त दूर करने का उपाय करना चाहिए। मैंगनीज उर्वरकों का प्रयोग मृदा में मिलाकर या खड़ी फसलों पर सीधे छिड़काव करके किया जाता है। मैंगनीज की कमी वाली मृदा में मृदा प्रयोग विधि से दी गयी मैंगनीज का निर्धारण पौध अनुपलब्ध रूप में हो



जौ

जाता है। प्रायः 0.5 प्रतिशत मैंगनीज सल्फेट के तीन छिड़काव 10-15 दिनों के अंतराल पर करने से मैंगनीज की कमी का नियंत्रण हो जाता है। इससे गेहूँ के उत्पादन में तीन गुना तक की वृद्धि पायी गयी है।

- **पीला रतुआ रोग:** इस रोग के लक्षण जनवरी के अन्तिम सप्ताह या फरवरी के प्रारम्भ में पत्तियों पर पिन के सिर जैसे छोटे-छोटे, अण्डाकार, चमकीले पीले रंग के धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं। ये पत्ती की शिराओं के बीच में पंक्तियों में होने से पीले रंग की धारी बनाते हैं। बाद में पत्ती की बाह्य त्वचा के नीचे काले रंग के टीलियम रेखाओं के रूप में दिखते हैं, जो चपटी काली पपड़ी द्वारा ढके रहते हैं। रोग ग्रसित पौधों की पत्तियां सूख जाती हैं। इस रोग की रोकथाम हेतु खड़ी फसल में प्रॉपीकोनेजोल 25 ई.सी. (टिल्ट) या ट्राइडिमिफोन 25 डब्ल्यू.पी. या टैबूकोनेजोल 250 ई.सी. का 0.1

गेहूँ में जस्ता की कमी



जस्ता के प्रयोग की मात्रा जस्ता की कमी, मृदा एवं फसल का प्रकार आदि पर निर्भर करती है। खड़ी फसल में कमी के लक्षण दिखाई देने पर 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट के घोल का छिड़काव 10 दिनों के अंतराल पर 2-3 बार करना चाहिए। मृदा में लोहे की कमी कम कार्बनिक पदार्थ वाली मृदाओं, चूनेदार मृदाओं, लोहा-पीलापन एवं क्षारीय मृदाओं में फसल उत्पादन में मुख्य रूप से बाधा है। मृदा एवं पौधों में इसकी क्रांतिक मात्रा क्रमशः 4-5 एवं 50 पीपीएम है। लोहे की कमी की पूर्ति पर्णाय छिड़काव से भी की जा सकती है। गेहूँ, धान, गन्ना, मूंगफली, सोयाबीन आदि में 1-2 प्रतिशत आयरन सल्फेट का पर्णाय छिड़काव, मृदा अनुप्रयोग की अपेक्षा अधिक लाभकारी पाया गया है।



गेहूँ की फसल में पीला रतुआ रोग के लक्षण

प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें। प्रति एकड़ के लिए 200 मि.ली. दवा 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

- **पर्ण झुलसा रोग:** यह एक जटिल रोग है, जो अल्टरनेरिया ट्रिटिसाइना, पायरेनोफोरा ट्रिटिसाई रीपेंटिस एवं बाइपोलेरिस सोरोकिनियाना द्वारा उत्पन्न होता है। इस रोग में पत्तियों पर बहुत छोटे, गहरे भूरे रंग के, पीले प्रभामंडल से घिरे धब्बे बनते हैं, जो बाद में परस्पर मिलकर पर्ण झुलसा रोग उत्पन्न करते हैं। इस रोग की रोकथाम हेतु खड़ी फसल में 0.1 प्रतिशत प्रॉपीकोनेजोल 25 ई.सी. (टिल्ट) का छिड़काव करें। 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से कार्बोक्सिन (वीटावैक्स 75 डब्ल्यू.पी.) रसायन के साथ बीजोपचार कर बुआई करें। इस रोग की रोकथाम हेतु रोग प्रतिरोधी किस्में उगाएं।
- **अनावृत कण्डुआ:** इस रोग में बालियों के दानों के स्थान पर काला चूर्ण बन जाता है, जो सफेद झिल्ली द्वारा ढका रहता है। बाद में झिल्ली फट जाती है और फफूंदी के असंख्य बीजाणु हवा में फैल जाते हैं। ये स्वस्थ बालियों में फूल आते समय उनका संक्रमण करते हैं।
- **करनाल बंट:** आजकल गेहूं में टिलिशिया इण्डिका नामक कवक के कारण उत्पन्न इस रोग में श्रेंसिंग के बाद निकले दानों में बीज की दरार के साथ-साथ गहरे भूरे रंग के बीजाणु समूह देखे जा सकते हैं।
- अनावृत कण्डुआ एवं करनाल बंट के नियंत्रण हेतु थीरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.



गेहूं की फसल में करनाल बंट रोग के लक्षण

एस. की 2.5 ग्राम अथवा कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 ग्राम अथवा कार्बोक्सिन 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.0 ग्राम अथवा टेबूकोनाजोल 2 प्रतिशत डी.एस. की 1.0 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीज उपचार कर बुआई करनी चाहिए। मृदाजनित एवं बीजजनित रोगों के नियंत्रण हेतु जैव कवकनाशी ट्राइकोडर्मा विरिडी 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा ट्राइकोडर्मा हारजिएनम 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. को 2.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर 60-75 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छिंटा देकर 8-10 दिनों तक छाया में रखने के उपरान्त बुआई के पूर्व आखिरी जुताई पर मृदा में मिला देने से रोगों के प्रबंधन में सहायता मिलती है। अतः स्वस्थ एवं निरोगी बीज पैदा करने हेतु बाली निकलते ही 2.0 कि.ग्रा. मैन्कोजेब या 500 मि.ली. प्रॉपीकोनेजोल 25 ई.सी. (टिल्ट) को 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। चूर्णी फफूंद रोग के प्रबंधन हेतु रोग सहिष्णु किस्मों का प्रयोग करें। रोग के आते ही दाने बनने की अवस्था तक 0.1 प्रतिशत प्रॉपीकोनेजोल 25 ई.सी. का पत्तियों पर छिड़काव करें।

- गेहूं की फसल में गेरुई या रतुआ जैसे रोग के लक्षण दिखाई देने पर टेबूकोनेजोल 25 ई.सी. (फोलिकर) या

ट्राइडिमिफोन 25 डब्ल्यू.पी. (बेलिटॉन) या प्रॉपीकोनेजोल 25 ई.सी. (टिल्ट) का 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर पत्तियों पर छिड़काव करें। फैलाव तथा रोग के प्रकोप को देखते हुए दूसरा छिड़काव 15-20 दिनों के अंतराल पर करें। बुआई के लिए अच्छे एवं स्वस्थ बीज का ही प्रयोग करें। उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के लिए एच.डी. 2967, एच.डी. 3086, डब्ल्यू.एच. 1105, एच.डी. 3043, एच.डी. 3059 एवं डी.पी. डब्ल्यू. 621-50 आदि प्रजातियों का चयन किसान भाई करें।

- यदि माहूँ का प्रकोप हो तथा इन्हें खाने वाले गिडार की संख्या कम हो, तो क्वीनालफॉस 25 ई.सी. का 1.0 लीटर या मोनोक्रोटोफॉस 25 ई.सी. का 1.4 लीटर दवा का मिथाइल-ओ-डीमेटान 25 ई.सी. की 1.0 लीटर दवा को 600-800लीटर पानी में घोलकर/हैक्टर की दर से छिड़काव करें। गेहूं के खेत में चूहों का प्रकोप होने पर जिंक फॉस्फाइड से बने चारे अथवा एल्यूमिनियम फॉस्फाइड की टिकिया का प्रयोग करें। चूहों की रोकथाम के लिए सामूहिक प्रयास अधिक सफल होगा।

- रस चूसने वाले कीट जैसे-चेंपा के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड 200 एस.एल. या 20 ग्राम सक्रिय तत्व का छिड़काव खेत के चारों तरफ दो मीटर बार्डर पर करें।



गेहूं की फसल में आयरन की कमी के लक्षण

जौ

जौ की फसल में दूसरी सिंचाई गांठ बनने की अवस्था (बुआई के 55-60 दिनों बाद) में और तीसरी सिंचाई दूधिया अवस्था (बुआई के 95-100 दिनों बाद) में करें। जौ की फसल में निराई-गुड़ाई का अच्छा प्रभाव होता है। खेत में यदि कंडुवा रोगग्रस्त बाली दिखाई दे तो उसे निकालकर जला दें। क्षारीय एवं लवणीय मृदा में अधिक संख्या में हल्की सिंचाई देना, ज्यादा गहरी तथा कम सिंचाई देने की अपेक्षाकृत उत्तम माना जाता है। धारीदार या पीला रतुआ पत्तों पर पीले, छोटे-छोटे कील पंक्तियों में, बाद में पीले रंग के हो जाते हैं। कभी-कभी ये कील पत्तियों के डंठलों पर भी पाए जाते हैं। रतुआरोधी प्रजातियों का प्रयोग करें। काले रतुआ लाल भूरे से लेकर काले रंग के लम्बे कील पत्तियों के डंठल पर पाये जाते हैं। इस रोग की रोकथाम के लिए प्रति हैक्टर 2 कि.ग्रा. डाइथेन जेड-78 (जिनेब) का छिड़काव करें। 500-600 लीटर घोल एक हैक्टर क्षेत्रफल के लिए काफी रहता है।



जौ एवं गेहूं इत्यादि के जिन खेतों में अधिक वर्षा का पानी भर जाता है, उनमें पानी निकालने के बाद नाइट्रोजन के लिए सी.ए.एन. डालने से कुछ मात्रा में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है। अधिक पानी भर जाने से ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। इसलिए सी.ए.एन. की सिफारिश की जाती है।

अधिक प्रकोप होने पर इस कीटनाशी का प्रयोग पूरे खेत में करें।

शीतकालीन मक्का

- रबी मक्का में 4-5 सिंचाइयां करनी पड़ती हैं। शीतकालीन मक्के की

फसल में पांचवीं सिंचाई (120-125 दिनों बाद) दाना भरते समय अवश्य करनी चाहिए। अगर आवश्यकता हो, तो अतिरिक्त सिंचाई खेत की नमी के अनुसार करना उपयुक्त होगा, अन्यथा



संकर मक्का

पौधों की बढ़वार के साथ-साथ उपज में भी कमी हो जायेगी।

- मक्के की फसल में तनाबेधक कीट और पत्ती लपेटक कीट की रोकथाम के लिए कार्बेरिल का 2.5 मि.ली./लीटर दवा का घोल 500 लीटर पानी में बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- शरदकालीन मक्का में रतुआ तथा चारकोल बंट का खतरा होने पर 400-600 ग्राम डाइथेन एम 47 को 200-250 लीटर पानी में घोलकर 2-3 छिड़काव करें।
- गुलाबी उकठा रोग:** इस रोग में दाने पड़ने के बाद पौधे खेत में कम नमी के कारण सूखने लगते हैं। तने को तिरछा काटने पर संवहन नालिकायें निचली पोरों पर गुलाबी रंग की दिखाई पड़ती हैं तथा सिकुड़ जाती हैं।
- काला चूर्ण उकठा रोग:** कटाई से 10-15 दिनों पहले पौधे खेत में सूखे दिखाई देते हैं। तनों को तिरछा काटने पर जड़ों के पास संवहन नालिकायें सिकुड़ी हुई तथा चूर्ण से पोर भरे हुए दिखायी देते हैं। इसकी रोकथाम हेतु स्वस्थ बीज का प्रयोग तथा बीजजनित रोगों से बचाव हेतु बीज को थीरम 2.5 ग्राम अथवा कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत की 2 ग्राम मात्रा में प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करके बोना चाहिए। कवकजनित रोगों से बचाव के लिए ट्राइकोडर्मा से 20 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीज उपचारित करें।

जायद मक्का

- जायद में मक्का की खेती भुट्टों एवं चारे, दोनों के लिए की जाती है। मक्का की खेती के लिए पर्याप्त जीवांश वाली दोमट मृदा अच्छी होती है। भली-भांति समतल एवं अच्छी जलधारण शक्ति वाली मृदा मक्का की खेती के लिए उपयुक्त होती है। पलेवा करने के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से 10-12 सें.मी. गहरी एक जुताई तथा उसके बाद कल्टीवेटर या देसी हल से दो-तीन जुताइयां करके पाटा लगाकर खेत की तैयारी कर लेनी चाहिए। जायद हेतु मक्का की उन्नत प्रजातियां सारणी-1 में संस्तुत की गयी हैं।
- मक्का की बुआई के लिए फरवरी का प्रथम सप्ताह सर्वोत्तम है। बुआई 20 फरवरी तक अवश्य कर लेनी चाहिए।

सारणी 1. मक्का की संकर प्रजातियों के पकने की अवधि और उपज

संकर/संकुल प्रजातियां	पकने की अवधि (दिन में)	दाने की उपज (क्विंटल/हैक्टर)
संकर प्रजातियां		
प्रकाश	70-75	35-40
जे.एच. 3459	70-75	35-40
एम.एम.एच.-133	80-85	40-45
प्रो.-4212	80-85	40-45
दक्कन-115	80-85	40-45
पूसा अगेती संकर मक्का-2	70-75	35-40
शिशु मक्का प्रजातियां		
एच.क्यू.पी.एम.-15	85-90	45-50
मालवीय संकर मक्का-2	80-85	40-45
गौरव	70-75	35-40
आजाद उत्तम	75-80	35-40
श्वेता	75-80	35-40
नवजोत	75-80	35-40
नवीन	75-80	35-40
शिशु मक्का	उपज (क्विंटल/हैक्टर) छिलका सहित	छिलका सहित लम्बाई (सें.मी.) शिशु मक्का की छिलका रहित उपज
पूसा अगेती संकर मक्का-2	45-50	5-6 16-18
एच.क्यू.पी.एम.-15	85-90	45-50 16-18
मालवीय संकर मक्का-2	80-85	40-45 16-18
आजाद कमल	45-45	4 -5 15-20
एच.एम.-4	45-50	7-8 15-20
प्रकाश	45-50	4-5 16-18
हरे भुट्टे हेतु विन ऑरेंज (मीठी मक्का), संकुल, प्रिया (मीठी मक्का) एवं माधुरी (मीठी मक्का)		

विलम्ब करने से जीरा निकलते समय गर्म हवायें चलने पर सिल्क तथा पराग कणों के सूखने की आशंका रहती है, जिससे दाना नहीं पड़ता है। जायद मौसम में संकर एवं संकुल प्रजातियों के लिए बीज दर 18-20 कि.ग्रा. एवं 20-25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर पर्याप्त होती है। बीज को 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम या 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. थीरम रसायन से उपचारित करके बोयें। संकर व संकुल प्रजातियों की बुआई 60 सें.मी. व पौधे से पौधे की बुआई 20-25 सें.मी. की दूरी पर करनी चाहिए।

- उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें। जिस मृदा में ज़िंक तत्व की कमी होती है, वहां पर पत्ती की मध्य धारी के दोनों तरफ सफेद धारियां दिखाई पड़ती हैं। इस कमी को दूर करने के लिए 20 कि.ग्रा. ज़िंक सल्फेट/हैक्टर की दर से अन्तिम जुताई के साथ मृदा में मिला दें। यदि किसी

कारणवश मृदा परीक्षण न हो पाया हो, तो संकर एवं संकुल प्रजातियों के लिए 80:40:40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटाश/हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए। भुट्टे के लिए



मटर

नाइट्रोजन की आधी और फॉस्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय देनी चाहिए। नाइट्रोजन की बची हुई मात्रा बुआई के 30 दिनों बाद देनी चाहिए।

- जायद मक्का की फसल में 5-6 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। 10-12 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। जीरा निकलते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।
- मक्का की फसल की प्रारंभिक अवस्था में खरपतवारों से काफी क्षति होती है। इसलिए निराई-गुड़ाई करना आवश्यक है। एट्रजीन नामक रसायन का प्रयोग करके भी खरपतवारों का नियंत्रण किया जा सकता है। 1.0-1.5 कि.ग्रा. एट्रजीन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. को 800 लीटर पानी में घोलकर बुआई के दूसरे या तीसरे दिन अंकुरण से पूर्व प्रयोग करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं अथवा एलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 4-5 लीटर को भी 800 लीटर पानी में घोलकर बुआई के 48 घण्टे के अन्दर प्रयोग कर खरपतवार नियंत्रित किये जा सकते हैं।

मटर, चना और मसूर

- मटर की फसल में फूल एवं शुरूआत के समय एक या दो सिंचाई करना लाभप्रद होता है। फूलों एवं पत्तियों को पाले से सुरक्षा हेतु भी सिंचाई की आवश्यकता होती है। देर से बोई गई मटर की फसल में फली आने पर सिंचाई करें। अगेती फसल पकने की अवस्था में होगी, अतः समय पर कटाई करें।

चना

- चने में आवश्यकता हो, तो फूल आने से पूर्व ही सिंचाई करें। फूल आते समय सिंचाई नहीं करनी चाहिए अन्यथा फूल झड़ने से हानि होती है। चने की फसल में बारानी क्षेत्रों में जल उपलब्ध होने तथा जाड़े की वर्षा न होने पर बुआई के 75 दिनों बाद सिंचाई करना लाभप्रद होता है। असिंचित क्षेत्रों में चने की कटाई फरवरी के अंत में होने लग जाती है।
- फेरोमोन ट्रैप ऐसा रसायन है, जो अपने ही वर्ग के कीटों को संचार द्वारा आकर्षित करता है। मादा कीट में जो हार्मोन निकलता है, यह उसी तरह की गंध से नर कीटों को आकर्षित करता है। इन रसायनों को सेक्स फेरोमोन ट्रैप कहते हैं। इसका उपयोग चने की फलीछेदक कीट के फसल पर प्रकोप के समय की जानकारी हेतु किया जाता है। फेरोमोन का रसायन एक सेप्टा (कैप्सूल) में यौन-जाल में रख दिया जाता है। 5-6 फलीछेदक कीट नर यौन-जाल में फंसे, उसी समय चने की फसल पर कीटनाशी दवाओं का प्रयोग कर देना चाहिये। 20 फेरोमोन ट्रैप प्रति हैक्टर की दर से लगायें।
- किसान भाई यदि चने के खेत में चिड़िया बैठ रही हो, तो यह समझ लें कि चने में फलीछेदक का प्रकोप होने वाला है। इन रसायनों का प्रयोग तभी करना चाहिए, जब चना फलीछेदक का प्रकोप अत्यधिक हो, उसके नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफॉस (36 ई.सी.) 750 मि.ली. या क्यूनालफॉस (25 ई.सी.) 1.50 लीटर या इंडोक्सोकार्ब 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी या स्पाइनोसैड या इमामेक्टीन बेन्जोएट पानी में घोलकर छिड़काव अवश्य करें।
- चने के फलीछेदक कीट नियंत्रण के लिए न्यूक्लियर पॉलीहाइड्रोसिस वायरस 250 से 350 शिशु समतुल्य + 1.0 प्रतिशत टीनोपोल का प्रयोग फलीछेदक, 600 लीटर पानी में घोलकर/हैक्टर की दर से छिड़काव फरवरी के अन्तिम सप्ताह में करने से अच्छी तरह नियंत्रित कर सकते हैं।
- चने में 5 प्रतिशत एन.एस.के.ई. या 3 प्रतिशत नीम का तेल या 2 प्रतिशत नीम के पत्ते का निचोड़ भी फलीछेदक के नियंत्रण का एक अच्छा विकल्प है। बेसिलस थूरीनजेनसीस 1-15 कि.ग्रा. और बीवेरिया बेसियाना 1.0 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव लाभदायक है।
- चने की फसल में झुलसा रोग में निचली पत्तियों का पीला पड़कर झड़ना व फलियों का कम बनना व विरल या छिदा होना इस रोग के विशिष्ट लक्षण हैं। प्रारंभ में पत्तियों पर जलसंतृप्त बैंगनी रंग के धब्बे बनते हैं, जो बाद में बड़े होकर भूरे हो जाते हैं। फूल मर जाते हैं और फलियां बहुत कम बनती हैं। झुलसा रोग की रोकथाम के लिए मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या जिंक मैंगनीज कार्बोमेट 2.0 कि.ग्रा. अथवा जीरम 90:2 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- चने की फसल में रस्ट रोग के लक्षण फरवरी व मार्च में दिखाई देते हैं। पत्तियों की ऊपरी सतह, टहनियों व फलियों पर हल्के भूरे काले रंग के उभरे हुए चकत्ते बन जाते हैं। इस रोग के नियंत्रण के लिए थायोफिनेट मिथाइल (70 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) 300 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल (25 प्रतिशत ई.सी.) 200 मि.ली. या मैन्कोजेब (75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) 500 ग्राम या प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।



- मटर की फसल में चूर्णिल आसिता रोग में पत्तियों तथा फलियों पर सफेद चूर्ण सा फैल जाता है। रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देते ही सल्फरयुक्त कवकनाशी जैसे सल्फेक्स 2.5 कि.ग्रा./हैक्टर या 3.0 कि.ग्रा./हैक्टर घुलनशील गन्धक या कार्बेन्डाजिम 500 ग्राम या ट्राइडोमार्फ (80 ई.सी.) 500 मि.ली. की दर से 800-1000 लीटर पानी में घोलकर 15 दिनों के अंतराल में 2-3 छिड़काव करें।
- रतुआ रोग से पौधों की वृद्धि रुक जाती है, पीले धब्बे पहले पत्तियों पर और फिर तने पर बनने लगते हैं। धीरे-धीरे ये हल्के भूरे रंग के हो जाते हैं। इस रोग के नियंत्रण के लिए डाइथेन एम-452 कि.ग्रा. या प्रोपिकोना 1 लीटर या हेक्साकोनाजोटा 1 लीटर/ हैक्टर की दर से 600 लीटर पानी में घोलकर 2-3 छिड़काव करें एवं उचित फसलचक्र अपनायें।
- फलीबेधक कीट, फलियों में छेद बनाकर बीजों को नुकसान पहुंचाते हैं। इसलिए फलियों पर सूक्ष्म छिद्रों से इसके मौजूद होने का पता लग जाता है। फली निकलने की अवस्था में फसल पर इमिडाक्लोप्रोप्रिड 0.5 प्रतिशत या डाइमेथोएट 0.03 प्रतिशत का 400-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। शीघ्र पकने वाली प्रजातियों का उपयोग एवं समय



मसूर

से बुआई फलीबेधक के प्रकोप से बचने में सहायक होते हैं।

- **पत्ती में सुरंग बनाने वाला (लीफ माइनर) कीट:** इस कीट के लार्वा मटर के पौधों की पत्तियों पर सुरंग बनाकर पत्तियों का हरा पदार्थ खाते हैं। यह कीट मटर की फसल को काफी हानि पहुंचाता है। इसके प्रभाव से पत्तियों पर टेढ़ी-मेढ़ी पंक्तियां जैसी बन जाती हैं। इस कीट के नियंत्रण के लिए फरवरी के दूसरे सप्ताह तक फूल आने से 15 दिन पहले फसल पर 0.025 प्रतिशत मिथाइल डैमीटान (100 मि.ली. मैटासिस्टाक्स 25 ई.सी.) या 1.50 लीटर साइपरमिथिन को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर खड़ी फसल पर 14 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।
- माहू कीट पत्तियों व मुलायम तनों से रस चूसकर एक ऐसा चिपचिपा पदार्थ भारी मात्रा में स्रावित करता है, जिसके द्वारा काली फफूंद का आक्रमण इन भागों में हो जाता है। इसकी रोकथाम के लिए 0.05 प्रतिशत मेटासिस्टॉक्स या 0.05 प्रतिशत रोगोर के घोल का छिड़काव 15-20 दिनों के अंतराल पर फसल पर कीटों के दिखाई देते ही एक या दो बार आवश्यकतानुसार करें।
- मसूर की फसल में माहू कीट पत्तियों तथा अन्य कोमल भागों का रस चूस कर हानि पहुंचाता है। इससे ग्रसित भाग सूख जाते हैं और पौधा कमजोर हो जाता है। तेलिया या थ्रिप्स कीट होता है जो मसूर की पत्तियों, फूल एवं फलियों पर पाया जाता है। पत्तियों से वे रस चूसते हैं, जिससे उन पर सफेद रंग के चकते

पड़ जाते हैं। मृदा में नमी की कमी से पौधों को अधिक हानि हो सकती है। माहू तथा तेलिया कीट के नियंत्रण के लिए फॉस्फोमिडान (85 ई.सी.) 250 मि.ली. या क्लोरोपायरीफॉस (20 ई.सी.) 750 मि.ली. या डायमिथियेट (30 ई.सी.) 500 मि.ली. मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोलकर/हैक्टर छिड़काव करें।

- मसूर की फसल में पाउडरी मिल्ड्यू रोग एरीसायफी पोलीगोनी नामक कवक से होता है। फूल आने की अवस्था अति संवेदनशील है। अनुकूल परिस्थितियों में रोग बहुत अधिक हानि पहुंचाने में सक्षम है एवं धीरे-धीरे फैलकर तनों, पत्तियों एवं फलियों पर फैल जाता है। रोगी फसल पर ट्रायडोमार्फ 2 प्रतिशत प्रति हैक्टर की दर से घुलनशील गंधक के का छिड़काव करें।



सरसों

- मसूर की फसल में रतुआ रोग के लक्षण दिखाई देते ही रतुआरोधी प्रजाति इस रोग का प्रभाव निष्क्रिय करती है। रोग दिखाई देते ही फसल पर मैन्कोजेब के 0.25 प्रतिशत घोल (5.2 ग्राम दवा 1 लीटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए।

राई-सरसों और सूरजमुखी

- असिंचित क्षेत्रों में सरसों की कटाई का यह समय है। अतः फसल की समय पर कटाई कर लें।
- सरसों की फसल में पेन्टेड बग कीट का नुकसान 4-5 पत्तियों की अवस्था तक अधिक रहता है। वयस्क कीट तथा उसका निम्फ पौधे के तने व पत्तियों से रस चूसते हैं। इससे पत्ते सफेद हो जाते हैं तथा बाद में मुरझाकर गिर जाते हैं। इस कीट का प्रकोप होने पर 2 प्रतिशत मिथाइल पैराथियान या 5 प्रतिशत मैलाथियान 20-25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
- राई-सरसों की फसल में माहू या चेंपा कीट पौधे के तने, फूलों व फलियों से रस चूसता है तथा फसल को भारी नुकसान पहुंचाता है। जब कीट का प्रकोप औसतन 25 कीट प्रति पौधा हो जाए, तो इसमें से किसी एक कीटनाशक जैसे-मैलाथियॉन 50 ई.सी. 1250 मि.ली. या फॉस्फोमिडान 85 डब्ल्यू.एस.सी. 250 मि.ली. या थायोमिडान 25 ई.सी. 1000 मि.ली. या मिथाइल डिमेटान 25 ई.सी. या डाइमैथोएट 30 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 35 डब्ल्यू.एस.सी. प्रति हैक्टर की दर

सूरजमुखी

- सूरजमुखी की खेती तीनों मौसम में की जा सकती है। फिर भी बुआई का समय इस तरह से निश्चित कर लेना चाहिए कि फूल लगने के समय लगातार बूँदा-बांदी, बादल छाए रहने या तापमान 38 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहने की स्थिति से बचा जा सके। सूरजमुखी की खेती अम्लीय व क्षारीय मृदा को छोड़कर सिंचित दशा वाली सभी प्रकार की मृदा में की जा सकती है, लेकिन दोमट मृदा सर्वोत्तम मानी जाती है। जहाँ इसकी पारंपरिक रूप से खेती नहीं होती है वहाँ इसकी बुआई बसंत ऋतु में जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है।



- सूरजमुखी की फसल के लिए अच्छी तरह से छनी हुई और उपजाऊ मृदा की आवश्यकता होती है। बीज दर मृदा की दशा, दानों के आकार, अंकुरण प्रतिशत, बोने का समय एवं बोने की विधि पर निर्भर करती है। सिंचाई पर निर्भर फसल के लिए 4-5 कि.ग्रा./हैक्टर बीज पर्याप्त होता है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सें.मी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 30 सें.मी. एवं बीज 4-5 सें.मी. गहरा बोना चाहिए।
- सूरजमुखी की संकर प्रजातियाँ जैसे-डी.आर.एस.एच.-1, के.बी.एस.एच.-44, पी.एस.एच.एफ.-118, पी.एस.एच.एफ.-569, पी.ए.सी.-36, पी.ए.सी.-1091, के.भी.एस.एच.-1, एच.एस.एफ.एच.-878, के.बी.एस.एच.-41, के.बी.एस.एच.-53, आर.एस.एफ.एच.-1, एल.एस.एफ.एच.-35, एम.एल.एस.एफ.एच.-47 और आर.एस.एफ.एच.-130 एवं संकुल प्रजातियाँ जैसे-मार्डन व सूर्या आदि की संस्तुति की गई है। बीजों में उत्पन्न होने वाले रोगों की रोकथाम के लिए 3 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की मात्रा को कैप्टॉन या थीरम से उपचारित कर लेना चाहिए।
- उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर ही करना उचित रहता है। सिंचाई पर आधारित फसल के लिए 60:90:30 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटाश की सिफारिश की जाती है। बुआई के समय सूरजमुखी की फसल के लिए 50% नाइट्रोजन + फॉस्फोरस एवं पोटाश खाद की सम्पूर्ण मात्रा देनी चाहिए और शेष को दो बराबर-बराबर भाग करके बुआई के 30 और 55 दिनों के बाद डालना चाहिए। फॉस्फोरस को प्राप्त करने के लिए सिंगल सुपर फॉस्फेट को लेना चाहिए, जिससे गंधक की आवश्यकता भी पूर्ण होती है।
- अंतर फसल प्रणाली: सूरजमुखी+मूंगफली (5:1/3:1), सूरजमुखी+सोयाबीन+सूरजमुखी (2:1) की दर से फसल बोना बहुत ही लाभदायक होता है।

से 600-800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

- सरसों की फसल में झुलसा या सफेद गेरुई रोग में पत्तियों की निचली सतह पर सफेद फफूंद की वृद्धि दिखाई देती है। इस रोग से ग्रसित पत्तियों पर हल्के भूरे धब्बे दिखाई देते हैं। इस रोग के लक्षण दिखने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड या जीनेब या मैन्कोजेब या केप्टाफाल (फोलटाफ) 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से 500-800 लीटर पानी का घोल बनाकर 10-12 दिनों के अंतराल पर दो छिड़काव अवश्य करें।

गन्ना

- बीज बुआई के समय 30-35 डिग्री सेल्सियस तापमान उत्तम माना जाता है। इसके साथ ही वातावरण शुष्क होने पर बुआई करनी चाहिए। गन्ने की खेती सभी प्रकार की मृदा में की जा सकती है, लेकिन दोमट और काली दोमट मृदा सर्वोत्तम मानी जाती है।
- गन्ने के स्वस्थ बीज का ही चयन करें। बसन्तकालीन गन्ने की बुआई देर से काटे गये धान वाले खेत में और तोरिया, मटर व आलू की फसल से खाली हुए खेत में की जा सकती है। बुआई के लिए संस्तुत प्रजातियों का चयन करें। गन्ने की बुआई शुगर केन प्लान्टर मशीन से 75 सें.मी. की दूरी पर कूड़ों में करना ज्यादा लाभदायक रहता है। फरवरी के दूसरे पखवाड़े में गन्ने की बुआई कर सकते हैं। शरदकालीन गन्ने में बुआई के 110-120 दिनों बाद नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा (60-75 कि.ग्रा./हैक्टर) की टॉप ड्रेसिंग कर दें।
- गन्ने की जल्दी तैयार होने वाली उन्नत प्रजातियाँ जैसे-सी.ओ. 0239, सी.ओ. 0238, सी.ओ. 0118, सी.ओ. 98014, सी.ओ. 89003, सी.ओ. 0237, को. पन्त 211, को. पन्त 3220, को. 0238, को. 0239, को. 0118, को. 98014, को.शा. 687, यू.पी. 05125, को.से. 98231, को.शा. 08272, को.शा. 96268, को.शा. 88230, को.शा. 8436, को.शा. 98247, को.शा. 95436, को.जे. 64, को.जे. 85 आदि में से उपलब्धतानुसार प्रजातियों का प्रयोग करें। गन्ने की मध्य या देर से पकने वाली प्रमुख प्रजातियाँ को.शा. 7918,



गन्ना

को.शा. 802, को.शा. 8118, को.शा. 767, को.शा. 8432, को.शा. 94257, को.शा. 96275, को.शा. पन्त 84212, को.शा. 90223, को.शा. पन्त 96219, को. पन्त 97277, को. पन्त 99214, यू.पी. 0097, सी.ओ. 0124 आदि में से उपयुक्त प्रजाति का चयन करें। जल मग्न क्षेत्र के लिए को.शा. 96436, यू.पी. 9529, यू.पी. 9530, बी.ओ. 54 व बी.ओ. 91 आदि प्रजातियों का चयन करें।

- गन्ने का बीज जिस खेत से लेना हो, बुआई से दो सप्ताह पूर्व उसकी सिंचाई कर दें। एक हैक्टर बुआई के लिए 60-70 क्विंटल गन्ना पर्याप्त होता है। गन्ने के बीज को उपचारित करने के लिए 250 ग्राम एरीटॉन या 500 ग्राम एगलाल करें। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए गन्ने की बसंतकालीन फसल में 120-150 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50-60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 30-40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की आवश्यकता होती है।
- गन्ने की पेड़ी से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि फसल की कटाई जमीन से सटाकर करें। खेत से खरपतवार निकाल दें और सिंचाई करें व मिट्टी में ओट आने पर 90 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की पहली टॉप ड्रेसिंग करें। कल्टीवेटर से गुड़ाई करके उर्वरक को मृदा में मिला दें। गन्ने की दो पंक्तियों के बीच मूंग या उड़द अथवा लोबिया या भिण्डी की एक

पंक्ति की बुआई की जा सकती है।

- गन्ने की फसल को दीमक व अंकुरबेधक कीट से बचाने के लिए बुआई के बाद कूड़ को ढकने से पूर्व 5

लीटर/हैक्टर की दर से क्लोरोपायरीफॉस को 2000 लीटर पानी में घोलकर कूड़ों में छिड़काव करें अथवा 25 कि.ग्रा./ हैक्टर की दर से फोरेट 10 जी कूड़ों में छिड़काव करें।

मेंथा एवं वानिकी पौधों का प्रबंधन

- पापुलर की प्रजातियां जैसे एल-51, एल-74, एल-188, एल-247, जी-3



पापुलर

चारा फसलें



- बरसीम, जई व रिजका की हर कटाई के बाद 18-20 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें, इससे अगली कटाई जल्दी मिलेगी। बरसीम या अन्य हरे चारे पशुओं की आवश्यकता से अधिक होने पर सुखाकर गर्मियों के लिए भंडारित कर लें।
- जई में पहली कटाई, बुआई के 55 दिनों बाद करें और कटाई के बाद सिंचाई करके प्रति हैक्टर 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की दूसरी टॉप ड्रेसिंग कर दें।
- मक्के के लिए अफ्रीकन टॉल, गंगा-2 व विजय प्रजातियों की बुआई के लिए 40 कि.ग्रा. बीज, चरी के लिए एम.पी. चरी, पूसा चरी-23 व पायनियर की संकर चरी की बुआई 25 कि.ग्रा. तथा लोबिया की रशियन जाईंट, यू.पी.सी.-5286 प्रजातियों का 35 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए।
- गर्मी में चारे के लिए मक्का, ज्वार, लोबिया की बुआई माह के दूसरे पखवाड़े से प्रारम्भ की जा सकती है।
- बहुवर्षीय घासों खेत में या मेड़ों पर बहुवर्षीय घासों जैसे-नेपियर, गिनी, सिटेरिया आदि की रोपाई कर सकते हैं। इनमें रोपाई के समय 100 क्विंटल गोबर की खाद, 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन एवं 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें।

मेंथा



फरवरी में बोयी जाने वाली मेंथा एक प्रमुख नगदी फसल है। मेंथा की उन्नत प्रजातियां हिमालय, शिवालिक, हाइब्रिड-77, कोशी, गोमती, एम.एस.एस.-1 व ईसी-41911 आदि का चयन करें। मेंथा फसल के लिए मध्यम से लेकर हल्की भारी मृदा उपयुक्त रहती है। जल निकास का उचित प्रबंध आवश्यक है। मेंथा की बुआई पूरे फरवरी माह में कर सकते हैं। बुआई हेतु 400-500 कि.ग्रा. जड़ें प्रति हैक्टर पर्याप्त होती हैं। जड़ों के 5-7 सें.मी. लम्बे टुकड़े, जिनमें 3-4 गांठें हों, को काटकर 5-6 इंच की गहराई पर 45-60 सें.मी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में बुआई करें। अच्छी फसल लेने के लिए बुआई के समय 30 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 75 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें। बुआई के तुरन्त बाद एक हल्की सिंचाई अति आवश्यक है। अन्य सिंचाइयां आवश्यकतानुसार 10-15 दिनों के अंतराल पर करते रहें।

व जी-48 कृषि वानिकी प्रणाली के लिए उपयुक्त हैं। पापुलर के नये पौधे कटिंग विधि से सफलतापूर्वक तैयार किये जा सकते हैं। पापुलर के पौधों को फरवरी के प्रथम पक्ष तक लगाने का समय है।

- पापुलर का पेड़ गहरी उपजाऊ अच्छे जल निकास वाली मृदा में अच्छा होता है। इसे फरवरी में कलमों द्वारा 2x2 फीट दूरी पर नर्सरी में लगाया जा सकता है। अगले वर्ष पौधों को जनवरी-फरवरी में खेत में लगा सकते हैं। नर्सरी में कलमों लगाने से पहले कैप्टॉन या डायथेन (0.3 प्रतिशत) घोल में डुबोएं, ताकि रोगों से बचाव रहे। पौधों को 3 फीट गहरे गड्ढे खोदकर ऊपर की आधी मिट्टी में गोबर की सड़ी-गली खाद मिलाकर भरें तथा पूरा पानी लगाएं। पौधों को मेड़ों पर पंक्तियों में 10 फीट दूरी पर तथा सिंचाई नाली के दोनों ओर पंक्तियों में 7 फीट दूरी पर लगाएं।

सब्जी वाली फसलें

- गोभीवर्गीय सब्जियों में सिंचाई, गुड़ाई तथा पौधों पर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। फूलगोभी जब उचित आकार की

हो जाये, तब उसकी कटाई करें। गोभी की फसल में पत्ती खाने वाले कीट की रोकथाम के लिए एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. 1 ग्राम/2 लीटर या फेनवैलरेट 20 ई.सी. 1.5 मि.ली./2 लीटर या क्विनलफॉस 25 ई.सी. 3 मि.ली./लीटर या स्पिनोसिड 45 एस.सी. 1 मि.ली./4 लीटर या बीटी 1 ग्राम/लीटर या नीम बीज अर्क (4 प्रतिशत) पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

- पत्तागोभी की फसल में अवांछित पौधों



को निकालें। इसमें माहू कीट के शिशु व वयस्क दोनों ही पत्तों से रस चूसते हैं, जिससे पत्ते टेढ़े-मेढ़े हो जाते हैं। अधिक प्रकोप से फूल नहीं बनते। इसके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.ली./3 लीटर या 0.15 प्रतिशत मेटासिस्टाक्स या डाइमैथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली./लीटर या क्विनलफॉस 25 ई.सी. 2 मि.ली./लीटर में से किसी एक रसायन का पानी में मिलाकर छिड़काव करें। अधिक ग्रसित पत्तों को निकालकर नष्ट कर दें।

- सब्जी मटर में फलियां बनते समय खेत में हल्की नमी का होना जरूरी है। चूर्णिल आसिता रोग का प्रकोप होने पर पौधों की पत्तियां, तने, शाखाएं तथा फलियां बुकनी जैसे पदार्थ से ढक जाती हैं। रोकथाम हेतु सल्फरयुक्त रसायन जैसे-हेक्साल, एलोसोल, सल्फेक्स 2.0 ग्राम/लीटर अथवा कैराथेन 1 मि.ली./लीटर पानी में मिलाकर रोग प्रकट होने पर छिड़काव करें तथा 15 दिनों के अंतराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।



लाल पत्तागोभी

सब्जी मटर



टमाटर

- हरी फलियां जब पूर्ण भरी हुई अवस्था में हों तथा उनका रंग गहरे हरे से हल्का हरा हो, तब तुड़ाई करें। हरी व मुलायम फलियां तोड़ें व वर्गीकरण कर पैकिंग के बाद बाजार भेजें। हरे दानों को प्रसंस्करित कर उपयोग करें।
- टमाटर की ग्रीष्मकालीन फसल में रोपाई के 25-30 दिनों बाद उन्नत किस्मों में प्रति हैक्टर 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (88 कि.ग्रा. यूरिया) व संकर असीमित बढ़वार वाली किस्मों के लिए 50-60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (120-130 कि.ग्रा. यूरिया) की प्रथम टॉप ड्रेसिंग करें।
- आलू, मिर्च और टमाटर की फसल को पछेता झुलसा रोग तथा माहूं से बचाने के लिए मैकोजेब 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/लीटर पानी) के साथ मोनोक्रोटोफॉस 0.04 प्रतिशत (4 मि.ली. 10 लीटर पानी में) के घोल का छिड़काव करें।
- शिमला मिर्च की फसल में निराई-गुड़ाई करें तथा खड़ी फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया का प्रयोग करें। रोगों तथा कीटों से बचाने के लिए 0.2 प्रतिशत इंडोफिल-45 नामक रसायन का एक छिड़काव अवश्य करें।
- प्राकृतिक वायु संवहक पॉलीहाउस तकनीक संरचना में उच्च गुणवत्ता एवं उच्च बाजार भाव वाली सब्जियों में टमाटर, शिमला मिर्च व बीजरहित खीरा एवं गुलाब, गुलदाउदी व जरबेरा आदि

पुष्प फसलों को सुगमता से उगाया जा सकता है।

- पॉलीहाउस/लो टनल विधि से अगेती खेती:** कद्दूवर्गीय सब्जियों की उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में गर्मी के मौसम के लिए अगेती फसल तैयार करने के लिए पॉलीहाउस में जनवरी में झोपड़ी के आकार का पॉलीहाउस बनाकर पौध तैयार कर लेते हैं। जब फरवरी में पाला पड़ने का समय समाप्त हो जाये, तो पॉलीथीन की थैली को काटकर हटाने के बाद पौधे की मिट्टी के साथ खेत में बनी नालियों की मेड़ पर रोपाई करके पानी लगाते हैं। इस प्रकार एक से डेढ़ माह बाद अगेती फसल तैयार हो जाती है, जिससे किसान अगेती फसल तैयार करके अधिक लाभ कमा सकता है।
- जनवरी/फरवरी में पॉलीहाउस के अंदर बैंगन की नर्सरी तैयार करें। फरवरी के मध्य खेत में रोपाई का काम शाम के समय करें। रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई

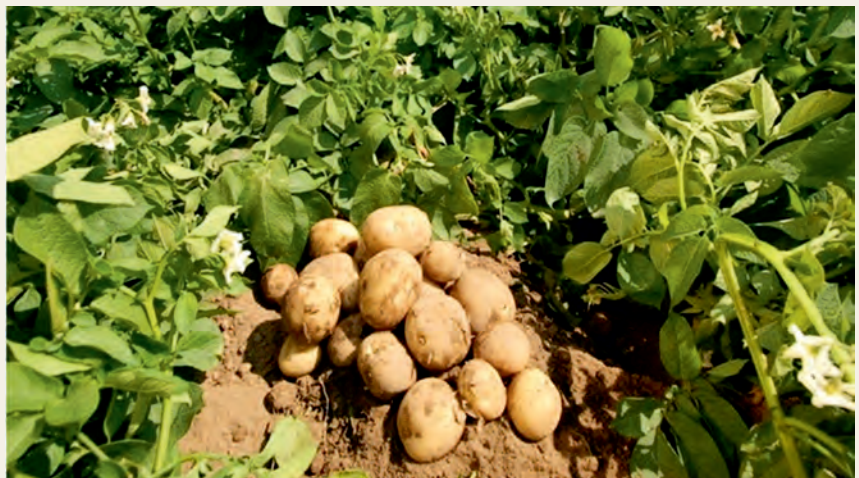


गाजर

करने की आवश्यकता है। रोपाई के लिए पंक्ति से पंक्ति तथा पौधे से पौधे की दूरी 75×60 सें.मी. रखी जाती है।

आलू

- फसल पर पछेती झुलसा रोग दिखाई दे तो इंडोफिल-45 दवा का 0.2 प्रतिशत घोल बनाकर खड़ी फसल पर अच्छी तरह से छिड़काव करें। आलू के पत्ते काटने के बाद खुदाई करें, जिससे आलू का छिलका मजबूत हो जाता है। खुदाई करने के बाद आलू को छाया में ढेर लगाकर सुखायें और ऊपर से मिट्टी साफ कर लें एवं बिना कटे आलुओं को बोरों में भरकर शीत भंडार में भेजने की व्यवस्था करें।



- सफेद सूंडी आलू की फसल में मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्रों में पायी जाती है। ढेर से खोदी गई फसल पर नुकसान अधिक होता है। इसके नियंत्रण के लिए वयस्क सूंडियों को मारने के लिए परपोषी पौधों पर कीटनाशकों जैसे-क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. को 2.5 मि.ली. पानी में घोलकर मानसून के तुरन्त बाद छिड़काव करना चाहिए। मिट्टी चढ़ाते समय पौधों के नजदीक कीटनाशी जैसे फोरेट 10 प्रतिशत या कार्बोफ्यूथ्रान 3 प्रतिशत की 2.5-3.0 कि.ग्रा. वास्तविक मात्रा का प्रति हैक्टर की दर से उपचार करें।

कम बढ़वार वाली किस्मों के लिए 60×45 या 60×60 सें.मी. दूरी पर्याप्त है। खेत की तैयारी के समय सड़ी हुई गोबर की खाद डालें। अच्छी फसल लेने के लिए 60-80 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 60 कि.ग्रा. पोटेश की मात्रा तथा 150 कि.ग्रा./हैक्टर नाइट्रोजन की आधी मात्रा अंतिम जुताई के समय मिट्टी में मिला दें तथा शेष नाइट्रोजन की मात्रा को फूल आने के समय प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें।

- गाजर, शलजम व मूली बीज वाली फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया/हैक्टर की दर से प्रयोग करके हल्की सी सिंचाई करें तथा 0.15 प्रतिशत मेटासिस्टॉक्स नामक रसायन का एक छिड़काव अवश्य करें। सामान्य फसल से तैयार जड़ों की खुदाई करें।
- पालक, मेथी और धनिया फसल में से पत्तियों की कटाई करें व तुरन्त गड़्डियां बांधकर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। बीज वाली फसल से अवांछित पौधों को निकालें एवं साथ ही निराई-गुड़ाई करें। कीटों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत रोगोर नामक रसायन का एक छिड़काव अवश्य करें।
- प्याज में प्रति हैक्टर नाइट्रोजन की सम्पूर्ण 100 कि.ग्रा. मात्रा का 1/3 भाग (72 कि.ग्रा. यूरिया) रोपाई के 30 दिनों बाद सिंचाई कर टॉप ड्रेसिंग



प्याज

करें। आवश्यकतानुसार समय पर निराई करें। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण हेतु स्टॉम्प का 3.0.-5.0लीटर/हैक्टर की दर से रोपाई के बाद सिंचाई से पहले छिड़काव करें।

- **प्याज में नील लोहित धब्बा (पर्पल ब्लॉच) रोग:** इस रोग में धब्बे से बन जाते हैं, जो मध्य से बैंगनी रंग के हो जाते हैं। नियंत्रण के लिए ब्लाइटॉक्स 50 (2.0 ग्राम/लीटर पानी) या डायथेन एम-45 या 0.2 प्रतिशत मैकोजेब आवश्यकतानुसार 10 दिनों के अंतराल पर और थ्रिप्स कीट लगने पर 0.6 प्रतिशत फॉस्फेमिडान पानी में घोलकर छिड़काव करें।

- लहसुन में यदि नाइट्रोजन की दूसरी टॉप ड्रेसिंग न की हो, तो यूरिया की 75 कि.ग्रा. मात्रा बुआई के 60 दिनों बाद डालकर सिंचाई करें। रोग और कीटों से बचाव के लिए एक सुरक्षात्मक छिड़काव मैकोजेब 2 ग्राम तथा फॉस्फेमिडान 0.6 मि.ली./लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- आवश्यकतानुसार भूमि में नमी की मात्रा कम होने पर हल्की सिंचाई करें। राजमा में फलियां बनते समय दूसरी सिंचाई कर दें।
- ग्रीष्मकालीन चौलाई की बुआई के लिए 2-3 कि.ग्रा./हैक्टर बीज रेत में मिलाकर छिड़काव या 20-25 सें.मी. दूरी पर पंक्तियों में करें तथा चौलाई में 50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 30 कि.ग्रा. पोटेश/हैक्टर बुआई के समय प्रयोग करें।
- भिंडी की फरवरी के अन्तिम सप्ताह से लेकर मार्च तक बुआई कर सकते हैं। बीज को बोने से पहले 12 घंटे 0.07 प्रतिशत बाविस्टीन घोल में भिगोएं, फिर 12 सें.मी. पंक्तियों में 6 इंच की दूरी पर बुआई करें। खेत की तैयारी के समय 10 टन गोबर की सड़ी खाद के साथ 25 कि.ग्रा. यूरिया 76 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 25 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटेश की दर से प्रयोग करें। उन्नत प्रजाति जैसे-काशी लालिमा (लाल बैंगनी फल), पूसा ए-4, पूसा ए-5, पूसा मखमली, पूसा सावनी तथा पर्किन लॉग ग्रीन आदि प्रमुख हैं।



पालक



लहसुन



लौकी



भिंडी

- बसंत-गर्मी का मौसम लौकी की बुआई (फरवरी-मार्च का समय) के लिए उपयुक्त है। लौकी की उन्नत प्रजातियां जैसे-पूसा नवीन, पूसा संतुष्टि, पूसा संदेश, पूसा मंजरी, पूसा समर प्रोलीफिक लौंग, आजाद हरित, पूसा समृद्धि, पी.एस.पी.एल., मेघदूत एवं पूसा हाइब्रिड-3 आदि प्रमुख हैं। लौकी की बुआई 3x0.75 मीटर पर कर सकते हैं। इसके लिए प्रति हैक्टर 4-5 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त होता है। बुआई 80-100 सें.मी. चौड़ी नाली

बनाकर उसकी दोनों मेड़ों पर दो बीज प्रति स्थान पर करें। बुआई के समय 80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटैश की आवश्यकता होती है।

- गर्मी के मौसम में लोबिया की बुआई फरवरी-मार्च में की जाती है। लोबिया की उन्नत प्रजातियां काशी गौरी, काशी

कंचन, पूसा कोमल (बैक्टीरियल ब्लाइट प्रतिरोधी), पूसा सुकोमल (मोजैक वायरस प्रतिरोधी), अर्का गरिमा, लोबिया 263, पूसा फागुनी तथा पूसा दो फसली आदि में से उपयुक्त प्रजाति का चयन करें।

- साधारणतः 20-25 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर की दर से पर्याप्त होता है। बीज की

सेम

बसंत ऋतु में सेम की बुआई फरवरी में की जाती है। सेम की बेलदार प्रजातियां: पूसा सेम-2, पूसा सेम-3, एच.डी. 18, रजनी एवं झाड़ीदार प्रजातियां: अर्का विजय, अर्का सौम्या, अर्का जय आदि

में से उपयुक्त प्रजाति का चयन करें। साधारणतः बेलदार एवं झाड़ीदार प्रजातियों के लिए 10 कि.ग्रा. और 30-40 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर की दर से पर्याप्त होता है। बीज की मात्रा प्रजाति तथा मौसम पर निर्भर करती है। बेलदार प्रजातियों के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 1.0-1.5 मीटर व पौधे से पौधे की दूरी 90 सें.मी. तथा झाड़ीदार प्रजातियों के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सें.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 15-20 सें.मी. रखी जाती है। हल्की सिंचाई 10-12 दिनों के अंतराल पर करते रहें। एक या दो बार निराई या रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए 3 लीटर स्टॉम्प/हैक्टर की दर से प्रयोग करें।





लोबिया

मात्रा प्रजाति तथा मौसम पर निर्भर करती है। बेलदार प्रजातियों के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 80-90 सें.मी. तथा झाड़ीदार प्रजातियों के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45-60 सें.मी. तथा बीज से बीज की दूरी 10-15 सें.मी. रखी जाती है। बुआई से पहले बीज का राइजोबियम कल्चर से उपचार कर लेना चाहिए। बुआई के समय मृदा में बीज के जमाव हेतु पर्याप्त नमी का होना बहुत आवश्यक है।

- लोबिया की अच्छी फसल लेने के लिए 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटैश प्रति हैक्टर खेत में अंतिम जुताई के समय मृदा में मिला देनी चाहिए तथा 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की मात्रा फसल में फूल आने पर प्रयोग करें। लोबिया की नरम व कच्ची फलियों की तुड़ाई 4-5

दिनों के अंतराल में करें। बेलदार प्रजातियों में 8-10 तुड़ाई तथा झाड़ीदार प्रजातियों में 3-4 तुड़ाई की जा सकती है।

- कुम्हड़ा/कद्दू बीज की बुआई 3×0.75 मीटर की दूरी पर 80-100 सें.मी. चौड़ी नाली बनाकर दोनों मेड़ों पर 3-4 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से करें। कुम्हड़ा/कद्दू की पूसा विकास, पूसा विश्वास, पूसा हाइब्रिड-1, अर्का सूर्यमुखी, पूसा अलंकार एवं अर्का चन्दन तथा चप्पन कद्दू की प्रोलिफिक, ऑस्ट्रेलियन ग्रीन, पैटी पेन, पूसा अलंकार व अर्ली येलो आदि प्रमुख प्रजातियां हैं। चप्पन कद्दू के लिए 5-6 कि.ग्रा./हैक्टर बीज की आवश्यकता होती है।

- खरबूजे के लिए 1.5-2.0×0.50 मीटर की दूरी पर 30 सें.मी. चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ों पर



खरबूजा

2.5-3.0 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से बीज की बुआई करें। खरबूजे की प्रजातियां जैसे-पूसा मधुरस, पूसा शर्बती, हरा मधु, लखनऊ बट्टी, पंजाब हाइब्रिड, पंजाब सुनहरा एवं पंजाब अनमोल प्रमुख हैं।

- खीरे के लिए बीज दर 2-2.5 कि.ग्रा./हैक्टर पर्याप्त होता है। खीरे की बुआई 1.5-2×0.50 मीटर पर 30 सें.मी. चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ों पर करें। खीरे की प्रजातियां जैसे-के.एच. 3, पोइंसेट, जापानीज, पूसा



खीरा

करेला

करेला एवं चिकनी व धारीदारी तोरई की बुआई 40 सें.मी. चौड़ी नाली की दोनों मेड़ों पर 2.5×0.60 मीटर की दूरी पर करें। करेला की पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष, पूसा हाइब्रिड-2, कल्याणपुर बारहमासी, कल्याणपुर सोना, फैजाबादी बारहमासी, कोयम्बटूर लौंग तथा चिकनी तोरई की पंजाब सदाबहार, कल्याणपुर चिकनी, पूसा सुप्रिया, पूसा चिकनी, पूसा स्नेहा एवं धारीदार तोरई-पूसा नसदार, सतपुतिया, पूसा नूतन व को.1 आदि प्रमुख प्रजातियां हैं। करेला, धारीदारी तोरई व चिकनी तोरई की बुआई 40 सें.मी. चौड़ी नाली बनाकर मेड़ों के दोनों तरफ 2.5×0.60 मीटर की दूरी पर करनी चाहिए। करेला के लिए 6-7 कि.ग्रा. एवं तोरई के लिए 5-5.5 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर पर्याप्त होता है।





चप्पन कद्दू

संयोग, खीरा-75, जापानी लौंग ग्रीन, प्रिया व पूसा उदय आदि प्रमुख हैं। खीरे के लिए प्रति हैक्टर 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 40 कि.ग्रा. पोटैश प्रयोग करें।

- टिण्डा व ककड़ी के बीज की बुआई पंक्ति से पंक्ति 2 मीटर की दूरी पर 30-40 सें.मी. चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ों पर 40-45 सें.मी. की दूरी पर करते हैं। टिण्डे के लिए 6-7 कि.ग्रा. व ककड़ी के लिए 2-3 कि.ग्रा./हैक्टर बीज की आवश्यकता होती है। टिण्डा की पंजाब टिंडा, अर्का टिंडा, एस.-48, हिसार सलेक्शन, पंजाब चमन व बीकानेरी ग्रीन तथा ककड़ी की लखनऊ अर्का, कल्याणपुर टाइप, रजनी व करनाल सलेक्शन आदि प्रमुख प्रजातियां हैं।



टिण्डा

- बेल वाली सब्जियों में खेत की तैयारी करते समय 150-200 क्विंटल/हैक्टर गोबर की खाद व 80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटैश की आवश्यकता होती है।
- तरबूज की प्रजातियां जैसे-अर्का माणिक, शुगर बेबी व स्थानीय किस्मों का प्रति हैक्टर 4-5 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त होता है। तरबूज की बुआई 2.5×0.50 मीटर की दूरी पर 40-50 सें.मी. चौड़ी नाली बनाकर मेड़ों के दोनों तरफ करें।

बागवानी फसलें

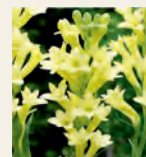
- आम में भुनगा कीट (मेंगे हॉपर) कीट कोमल प्ररोहों, पत्तियों तथा पुष्पक्रमों से रस चूसते हैं और फल गिरने लगते हैं। इसकी रोकथाम के लिए कार्बोरिल (2 मि.ली./लीटर पानी) या क्लोरोपाइरीफॉस (5 मि.ली./लीटर पानी) या मोनोक्रोटोफॉस नामक रसायन की 10 मि.ली. मात्रा को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें या फॉस्फेमिडान 0.6 मि.ली./लीटर पानी



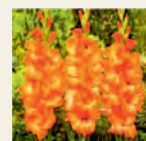
आम

पुष्प व सुगंध वाले पौधे

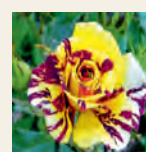
- रजनीगन्धा के बल्बों के रोपण से 10-15 दिनों पूर्व क्यारियों में 45 सें.मी. गहरी खुदाई करके प्रति वर्गमीटर की दर से 10 कि.ग्रा. गोबर या कम्पोस्ट खाद प्रति वर्ग मीटर तथा सिंगल सुपर फॉस्फेट व पोटैश प्रत्येक 80-100 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से बेसल ड्रेसिंग करें।
- ग्लैडियोलस की मुरझाई हुई टहनियों को निकाल दें तथा स्पाइक के नीचे के फूल थोड़ा खिलने के बाद डंठल को काटकर विपणन हेतु भेजें। ग्लैडियोलस में आवश्यकतानुसार सिंचाई व निराई-गुड़ाई करें।
- गुलदाउदी के सकर्स को अलग करके गमलों में लगा दें।
- गुलाब के सूखे फूलों व आवश्यक अंकुरों को तोड़ दें। नये पौधे लगाने तथा बडिंग का कार्य करें। गुलाब की बसंतकालीन बहार लेने के लिए घुली हुई खाद देनी चाहिए तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई व निराई-गुड़ाई अवश्य करें। माहू की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस 0.4 प्रतिशत (1 मि.ली./लीटर) का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बसन्तकालीन बहार के लिए घुली हुई खाद देनी चाहिए तथा आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करते रहें।
- गर्मी के फूलों जैसे-जीनिया, सनफ्लावर, पोर्चूलाका व कोचिया के बीजों को नर्सरी में बोयें।



रजनीगन्धा



ग्लैडियोलस



गुलाब

की दर से 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

- आम में पाउडरी मिल्ड्यू (चूर्णी आसिता) की रोकथाम के लिये 250 ग्राम कैराथेन का 500 लीटर पानी में या ट्राइडेमेफान 0.1 प्रतिशत (1 मि.ली./लीटर) या डाइनोकैप 0.1 प्रतिशत (1 मि.ली./लीटर) या गंधक (500 ग्राम/पौधा) चूर्ण का प्रयोग करना चाहिए। डायानोकेप (1 मि.ली./लीटर पानी) का छिड़काव फरवरी-मार्च में 15 दिनों के अंतराल पर करना चाहिए।
- अमरूद के बीजू पौधे तैयार करने के लिए बीजों की पौधशाला में बुआई करें।
- पौधशाला में अंगूर की स्वस्थ कलम 75×75 सें.मी. चौड़े तथा गहरे गड्ढों में 1:1 गोबर की खाद तथा मिट्टी के मिश्रण भरने के बाद जनवरी-फरवरी में लगानी चाहिए। अंगूर में श्यामव्रण रोग की रोकथाम के लिए ब्लाइटॉक्स-50 दवा का छिड़काव करना चाहिए।
- अंगूर के बाग में यदि जनवरी माह में खाद एवं उर्वरक नहीं दिया गया है, तो फरवरी में प्रति पौधे की दर से प्रथम वर्ष 10 कि.ग्रा. कम्पोस्ट/गोबर खाद के



अंगूर

अलावा 100 ग्राम नाइट्रोजन, 60 ग्राम फॉस्फोरस एवं 80 ग्राम पोटाश का प्रयोग करें। पांच वर्ष या इससे ऊपर यह मात्रा बढ़ाकर 500 ग्राम नाइट्रोजन, 300 ग्राम फॉस्फोरस एवं 400 ग्राम पोटाश का प्रयोग करें।

- नीबू में मूलवृत्त तैयार करने हेतु पौधशाला में बीजों की बुआई करें। फलदार बागों में नाइट्रोजन व पोटाश उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई कर दें। लेमन की कलमों की रोपाई पौधशाला में करें। नीबू के एक वर्ष के पौधे के लिए 10 कि.ग्रा. कम्पोस्ट/गोबर खाद, 25 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फॉस्फोरस एवं 25 ग्राम पोटाश का प्रयोग करें या उससे अधिक आयु के पौधे के लिए यह मात्रा बढ़कर क्रमशः 90-100 कि.ग्रा. कम्पोस्ट/गोबर की खाद, 250 ग्राम नाइट्रोजन, 500 ग्राम फॉस्फोरस व 250 ग्राम पोटाश का प्रयोग करें।
- पिछले मौसम में लगाये गये पपीते के पौधों में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई करने के बाद एक सिंचाई कर दें।
- केले के बगीचों से सूखी पत्तियां निकालकर साफ-सफाई करें। इस माह के अंत तक नाइट्रोजन व पोटाश वाली उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई कर दें। माहू की रोकथाम के लिए क्विनालफॉस (25 ई.सी.) 1.0 लीटर/हैक्टर की दर से छिड़काव कर दें।
- फलवृक्षों में उर्वरक देने के लिए अच्छा होगा कि वृक्ष के मुख्य तने से 1-2 मीटर की दूरी पर लगभग 30 सें.मी. चौड़ी एवं 15-20 सें.मी. गहरी नाली बनाकर उसमें उर्वरकों का मिश्रण

छिड़क दें तथा ऊपर से मिट्टी से ढक देने के बाद 10-15 सें.मी. सिंचाई कर दें।

- लीची के एक वर्ष के पौधे में 5 कि.ग्रा. कम्पोस्ट/गोबर खाद, 50 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फॉस्फोरस एवं 25 ग्राम पोटाश की मात्रा जिसे क्रमशः बढ़ाकर 10 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु के पौधे में 50 कि.ग्रा. कम्पोस्ट/गोबर खाद, 250 ग्राम नाइट्रोजन एवं फॉस्फोरस एवं 500 ग्राम पोटाश का प्रयोग करें।
- कटहल के फलदार बागों में नाइट्रोजनधारी व पोटाश उर्वरकों का प्रयोग करें। पत्ती के काले धब्बे की रोकथाम के लिए ब्लाइटॉक्स-50 के घोल का छिड़काव करें।
- आड़ू की फसल में पर्ण-कुंचन माहू की रोकथाम के लिए ऑक्सीडिमेटान मिथाइल 25 ई.सी. (0.2 प्रतिशत) का छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर करें।
- लोकाट की फसल में फलछेदक एवं फल विगलन कीट की रोकथाम



लोकाट

- के लिए मैलाथियान 0.2 प्रतिशत व ब्लाइटॉक्स-50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।
- बेर के बाग को साफ रखें। फलछेदक कीट की रोकथाम के लिए मैलाथियॉन 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- आंवला के नये व फलदार वृक्षों में नाइट्रोजनधारी व पोटाश उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई कर दें।
- सिंचाई की सुविधा होने पर आम, अमरूद, आंवला, कटहल, लीची व पपीता के बाग का रोपण करें। फलों के नये व पुराने बागानों में अंतरासस्य के रूप में लोबिया, मिर्च, टमाटर व भिंडी आदि की बुआई/रोपाई अवश्य करें।

अमरूद



इसके एक वर्ष के पौधे के लिए 10 कि.ग्रा. कम्पोस्ट/गोबर खाद, 30 ग्राम नाइट्रोजन एवं फॉस्फोरस एवं 60 ग्राम पोटाश व 6 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिए यह मात्रा बढ़कर क्रमशः 10 कि.ग्रा. कम्पोस्ट/गोबर की खाद, 180 ग्राम नाइट्रोजन एवं फॉस्फोरस तथा 360 ग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। अमरूद की फसल में एंथ्रेक्नोज रोग की रोकथाम के लिए ब्लाइटॉक्स (2 ग्राम/लीटर) का 20 दिनों के अंतराल पर 2-3 छिड़काव करना चाहिए।